Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ऊर्जा सुरक्षा और भारत-रूस संबंध: यूक्रेन युद्ध के बाद का विश्लेषण

धीरज जायसवाल*

* शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) भारत

प्रस्तावना – ऊर्जा सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की आर्थिक स्थिरता, औद्योगिक विकास तथा रणनीतिक स्वायत्तता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार होती है। 21वीं सदी में ऊर्जा केवल आर्थिक संसाधन नहीं रही, बल्कि यह भू-राजनीतिक शक्ति और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का भी एक प्रमुख साधन बन चुकी है। भारत, जो विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है, अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर करता है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, भारत अपनी कुल कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग 80 प्रतिशत आयात करता है, जिससे ऊर्जा सुरक्षा उसकी आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण भारत की ऊर्जा मांग निरंतर बढ़ रही है, जो भविष्य में और अधिक ऊर्जा संसाधनों की आवश्यकता को रेखांकित करती है। इस संदर्भ में, वर्ष 2022 में प्रारंभ हुए रूस यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलाओं में अस्थिरता, कीमतों में तीव्र उतार-चढ़ाव तथा ऊर्जा बाजारों में अनिश्चितता उत्पन्न हुई।

भारत और रूस के संबंध ऐतिहासिक रूप से गहरे, स्थायी और बहुआयामी रहे हैं, जो शीत युद्ध काल से विकसित होते हुए वर्तमान में 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी' के रूप में स्थापित हो चुके हैं। इन संबंधों का विस्तार रक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा और आर्थिक सहयोग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है किंतु समकालीन वैश्विक परिदृश्य में ऊर्जा सहयोग इन संबंधों का केंद्रीय स्तंभ बन चुका है। रूस, जो विश्व के प्रमुख ऊर्जा उत्पादकों में से एक है, भारत के लिए एक महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ऊर्जा आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरा है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों, विशेष रूप से SWIFT प्रणाली से आंशिक बहिष्कार, ने अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा व्यापार को बाधित किया और रूस को अपने ऊर्जा निर्यात के लिए वैकल्पिक बाजारों की तलाश करने के लिए प्रेरित किया। इस परिस्थिति में एशियाई देशों, विशेष रूप से भारत और चीन ने रूस के लिए महत्वपूर्ण बाजार के रूप में उभरकर वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला के पुनर्गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

युद्ध के पश्चात भारत-रूस ऊर्जा सहयोग में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिला। युद्ध से पूर्व भारत रूस से अपेक्षाकृत कम मात्रा में तेल आयात करता था, किंतु 2022 के बाद इसमें तीव्र वृद्धि हुई और 2024-25 के दौरान रूस भारत के कुल कच्चे तेल आयात का लगभग 35 प्रतिशत आपूर्ति करने लगा। हालिया रिपोर्टों के अनुसार, 2025 में भी भारत ने रियायती दरों पर रूसी तेल आयात को बनाए रखा, जिससे रूस भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बना रहा। यह परिवर्तन न केवल आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि यह वैश्विक ऊर्जा राजनीति में भारत की भूमिका को भी दर्शाता है। रियायती दरों पर तेल आयात करने से भारत को वैश्विक मूल्य अस्थिरता के बीच सस्ती ऊर्जा प्राप्त हुई, जिसने घरेलू महंगाई को नियंत्रित करने, चालू खाते के घाटे को सीमित करने तथा आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अतिरिक्त, भारत-रूस द्विपक्षीय व्यापार में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो 2017 में लगभग 8 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2024-25 में लगभग 65-68 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया। यह वृद्धि ऊर्जा व्यापार के बढ़ते महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भी भारत और रूस के बीच सहयोग लगातार मजबूत हो रहा है, विशेष रूप से तमिलनाडु स्थित कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना के माध्यम से। यह परियोजना न केवल भारत की ऊर्जा क्षमता को बढ़ाती है, बल्कि स्वच्छ और दीर्घकालिक ऊर्जा स्रोतों की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके अतिरिक्त, दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक ऊर्जा अनुबंध, निवेश सहयोग और तकनीकी साझेदारी भी ऊर्जा संबंधों को और सुदृढ़ कर रहे हैं।

इस परिवर्तित वैश्विक परिदृश्य में भारत ने 'रणनीतिक स्वायत्तता' की नीति का प्रभावी ढंग से पालन किया है। भारत ने न तो पश्चिमी देशों के दबाव में आकर रूस से अपने संबंधों को सीमित किया और न ही अपने राष्ट्रीय हितों से समझौता किया। यह दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय संबंधों के यथार्थवाद सिद्धांत के अनुरूप है, जिसमें राष्ट्र अपने हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। भारत ने संतुलित कूटनीति अपनाते हुए एक ओर रूस के साथ ऊर्जा सहयोग को बनाए रखा, वहीं दूसरी ओर अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को भी मजबूत किया। इस प्रकार, भारत ने एक स्वतंत्र और बहु-आयामी विदेश नीति का प्रदर्शन किया, जो उसे वैश्विक राजनीति में एक महत्वपूर्ण और संतुलित शक्ति के रूप में स्थापित करती है।

हालांकि, भारत-रूस ऊर्जा सहयोग के साथ कई चुनौतियाँ और जोखिम भी सामने आए हैं। पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण भुगतान प्रणाली जटिल हो गई, जिसके चलते वैकल्पिक भुगतान तंत्र जैसे रुपये-रूबल व्यवस्था को अपनाने की आवश्यकता पड़ी। इसके अतिरिक्त, बीमा, शिपिंग

और लॉजिस्टिक्स से संबंधित बाधाओं ने ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित किया। अमेरिका और यूरोपीय देशों द्वारा भारत पर कूटनीतिक दबाव भी एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में उभरा, जिसने भारत के लिए संतुलन बनाए रखना और अधिक जटिल बना दिया। इसके साथ ही, रूस पर अत्यधिक निर्भरता भविष्य में भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए जोखिम उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि किसी एक स्रोत पर अत्यधिक निर्भरता आपूर्ति संकट और भू-राजनीतिक जोखिमों को बढ़ा सकती है।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए भारत ने ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण की दिशा में सक्रिय कदम उठाए हैं। हालिया रिपोर्टों के अनुसार, भारत ने मध्य पूर्व, अमेरिका और अफ्रीका से तेल आयात में वृद्धि की है, जिससे ऊर्जा आपूर्ति को संतुलित और सुरक्षित बनाया जा सके। इसके अतिरिक्त, भारत नवीकरणीय ऊर्जा विशेष रूप से सौर, पवन और ग्रीन हाइड्रोजन के विकास पर भी विशेष ध्यान दे रहा है। भारत सरकार द्वारा निर्धारित नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों और अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी पहलों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति सुनिश्चित की है। ऊर्जा भंडारण तकनीकों का विकास, इलेक्ट्रिक वाहनों का विस्तार और हरित ऊर्जा निवेश भविष्य की ऊर्जा रणनीति के महत्वपूर्ण घटक हैं, जो दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करने में सहायक होंगे।

अंततः, रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद भारत-रूस ऊर्जा संबंधों में एक नया और जटिल आयाम जुड़ा है, जिसमें अवसर और चुनौतियाँ दोनों निहित हैं। भारत ने इस वैश्विक संकट को अवसर में परिवर्तित करते हुए अपनी ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत किया है और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक स्वतंत्र एवं संतुलित भूमिका का प्रदर्शन किया है। तथापि, दीर्घकालिक दृष्टिकोण से भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण करे, नवीकरणीय ऊर्जा के विकास को प्राथमिकता दे तथा रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखे, जिससे वह भविष्य की वैश्विक अनिश्चितताओं और भू-राजनीतिक चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. International Energy Agency (IEA). (2023). *World Energy Outlook 2023.*
2. World Bank. (2024). *Global Economic Prospects.*
3. International Monetary Fund (IMF). (2024). *World Economic Outlook.*
4. Reserve Bank of India (RBI). (2023). *Annual Report 2022–23.*
5. Ministry of External Affairs (MEA), India. (2024). *India–Russia Relations.*
6. Observer Research Foundation (ORF). (2023). *India–Russia Energy Cooperation.*
7. The Economic Times. (2025, March 15). *India–Russia oil imports remain strong.*
8. The Hindu. (2025, April 5). *India's energy diversification strategy.*

****